

fg.Mu& eqk&xak unh i pk; r fu.kz
¼ dgy i`B 16 ½

i pk; r cBd dh frffk

11 जून, 2015

lkpk; r cBd dk LFku

गुलमोहर हॉल, इंडिया हैबिटेट सेंटर (भारत पर्यावास केन्द्र), लोधी रोड, नई दिल्ली

Llplyd

जलपुरुष श्री राजेन्द्र सिंह (अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जल कार्यकर्ता)

09414066765, watermantbs@yahoo.com

vk; kt d

जल-जन-जोडो अभियान

9868200040/9415114151, jaljanjodoabhiyan@gmail.com

i pk; r eamiLFkr fof`k`V I jdkjh ifrfuf/k

श्री शिवपाल सिंह यादव (लोक निर्माण, सिंचाई एवम् जल संसाधन मंत्री, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ)

श्री दीपक सिंघल (प्रधान सचिव-सिंचाई एवम् जल संसाधन विभाग, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ)

श्री शशिशेखर (सचिव, जल संसाधन, नदी विकास एवम् गंगा पुनर्जीवन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली)

श्री मनोज कुमार सिंह (संयुक्त सचिव, वन एवम् पर्यावरण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली)

श्री पंकज कुमार (जिलाधिकारी आगरा)

श्री राजेश कुमार (जिलाधिकारी मथुरा)

श्री पंकज यादव (जिलाधिकारी मेरठ)

सर्व श्री सी के वर्मा, श्री एस के शर्मा तथा श्री के के जैन (सिंचाई विभाग, उ. प्र. के अंतर्गत यमुना, यमुना पश्चिम तथा गंगा से संबंधित तीन मुख्य अभियंता)

i pk; r eamiLFkr xj I jdkjh fof`k`V ifrfuf/k

श्री बासटियन मोहर्मिन (एशिया एवम् भारत सह-प्रमुख, वाटर रिसोर्स ग्रुप)

श्री श्याम खेडका (भारतीय प्रतिनिधि - खाद्य एवम् कृषि संगठन, संयुक्त राष्ट्र संघ)

सर्व श्री यज्ञमुनि, महावीर त्यागी, पी, के, शर्मा, कृष्णपाल सिंह, विक्रान्त शर्मा, मेजर डॉ. हिमांशु, संजय सिंह,

पंकज कुमार, भगवान सिंह, एना, अनीता आर्य, अशोक सिन्हा (जलबिरादरी व संबद्ध संगठनों के सदस्य)

i pk; r eady miLFkr InL; I 4;k

लगभग 180

i'B 2

fu.kk; d ip

प्रोफेसर श्री विनोद तारे (व्याख्याता – पर्यावरण अभियांत्रिकी एवम् प्रबंधन कार्यक्रम. सिविल अभियांत्रिकी विभाग, भारतीय तकनीकी संस्थान, कानपुर, उत्तर प्रदेश–208016)

0512-259-7792 / 7395, vinod@iitk.ac.in

श्री एस. के. शर्मा (मुख्य अभियंता (गंगा) – उ. प्र. सिंचाई विभाग, मेरठ, उत्तर प्रदेश)

9350277887, sudhirksharma15@gmail.com

डॉ. श्रीमती वीना खंडूरी (राष्ट्रीय समन्वयक तथा कार्यकारी सचिव – इंडिया वाटर पार्टनरशिप, नई दिल्ली)

9891195806, iwpneer@gmail.com

श्रीमती इंदिरा खुराना (नीति प्रमुख – आई पी ई ग्लोबल, नई दिल्ली)

9810160212, indukhurana@yahoo.co.uk

श्री अरुण तिवारी (पानी/नदी विषय संबंधी पत्रकार व लेखक)

011-22043335, 9868793799, amethiarun@gmail.com

fgMu&; eqk&xak ipk; r dk fu.kk;

दिनांक 11 जून, 2015

- 1- I nkK % गंगा के प्रवाह में प्रदूषित पानी की आवक औसतन 700 क्युसेक है; जबकि यदि पूरी क्षमता के साथ वर्षा जल संचयन की कोशिश की जाये, तो गंगा में सतत प्रवाह की मात्रा को 50 हजार क्युसेक तक बढ़ाया जाना संभव है। उक्त तथ्य को आधार बनाकर श्री दीपक सिंघल (प्रधान सचिव – सचिव, सिंचाई एवम् जल संसाधन विभाग, उ. प्र. शासन) ने पंचायत को यह बताने की कोशिश की कि नदियों में ताजे जल की मात्रा बढ़ाना, प्रदूषण का एक कारगर समाधान है। उ. प्र. शासन प्राथमिकता पर यह कार्य करना चाहता है।

fu.kk; I d; k&, d % ftruk t: jh vkj iHkoh ufn; ka ea rkts ty dh
ek=k c<kuk g\$ mruk gh t: jh vkj iHkoh dne g\$ inwk.k dh

jkdFkke vks byktA vr%mRrj ins'k "kkl u] rhuka igyqka dks l eku
ikFkfedrk nus okyh ins'k unh ufr fufeZ dj rnuq kj l e; c)
fdz kbo; u dk; dz cuk; A

i' B 3

unh ea izkg c<kusgrqfu.kz ¼ d; k 02 l s 06½

2- l ntk : किसी भी नदी के तीन क्षेत्र होते हैं : प्रथम – सामान्य दिनों में नदी का पानी जहां तक बहता है; द्वितीय – सामान्य बाढ़ का पानी जितना क्षेत्रफल घेरता है; तृतीय : पिछले सौ वर्षों के दौरान सर्वाधिक बाढ़ वाले वर्ष में नदी का पानी जहां तक पहुंचा।

पंचायत के संचालक जलपुरुष श्री राजेन्द्र सिंह ने इन्हे क्रमशः नीले, हरे और लाल क्षेत्र का नाम दिया। श्री सिंह ने पंचायत में उपस्थित उत्तर प्रदेश के लोकनिर्माण विभाग एवम् सिंचाई व जल संसाधन विभाग के माननीय मंत्री (श्री शिवपाल सिंह यादव) से मांग की, कि वह अधिकारिक तौर पर सुनिश्चित करे कि क्रमशः इन तीनों क्षेत्रों की पहचान तथा चिन्हीकरण कर उसे तदनुसार अधिसूचित किया जाये। माननीय मंत्री ने पंचायत के समक्ष यह मांग स्वीकार की।

flk.kz l d; k&nks %mRrj ins'k "kkl u ifrfuf/k ds rks ij ekuuh; ea=h
Jh f"koiky fl g ;kno us ipk; r ds l e{k ufn; ka ds uhyZ gjs vks
yky {ks= dh igpku} fplghdj.k vks vf/kl puk tkjh djus dh tksek
Lkhdkjh gZ og bl dk fdz kbo; u , d ufrxr fu.kz rFkk l e; c)
dk; dz ds : lk eadjkus dk d'V dja

mi fu.kz 2 d %ufrxr rks ij fdl h Hh fLFkr eafdl h Hh unh ds
uhyZ gjs rFkk yky {ks= dk Hk&mi; ks rFkk ekfydkuk cnyus dh
vuqfr u gka

mi fu.kz 2 [k %mRrj ins'k "kkl u] unh {ks= ds l kFk&l kFk mRrj
ins'k dh iR; d tyl jpk dk l phdj.k djZ l jdkjh fjdkMZ ea ntZ
rFkk okLrfod ekStmk jdcs dks l koZfud dja bl l cak ea vf/kl puk

o'kz r; dj u;s fl js l s l Hkh tyl j p u k v k a d k j d c k l u k e l m i ; k x
r F k k m i ; k x d r k z v f / k l p r d j a

, d k f d , t k u s l s m R R k j i n s ' k " k k l u d s j k t L o f o H k k x } k j k t y
l j p u k v k a l s v f r d e . k e p r d j u s d h c k c r - d j h c , d n " k d i o z t k j h
v f r e g R o i w k z o l j k g u h ; v f / k l p u k d h v u i k y u k d j u s d h i H k k o h
i g y l H k o g k s l d s x h A

i ' B 4

m i f u . k z 2 x % ; g d k e l c l s i g y \$ m R r j l k n s ' k d h l c l s i n f i ' k r
r F k k i o k g [k s p o p h u f n ; k a d s t y x z . k { k s - k a e a g k A

m i f u . k z 2 ? k % f g . M u] m R r j i n s ' k j k T ; d h l o k z / k d i n f i ' k r u n h
g A v r b l d k e d k " k k k j E H k f g . M u u n h t y x z . k { k s - l s g h f d ; k
t k ; A

m i f u . k z 2 3 % m R r j i n s ' k " k k l u & i z ' k k l u] u n h { k s - r F k k v U ; t y
l j p u k v k a d h i g p k u r F k k f p l u g h d j . k d s d k e d k s L F k k u h ; u n h l a B u
r F k k l a a) x t e i p k ; r k a } k j k v f / k d k f j d r k j i j x f B r d h x b z t y
l f e f r ; k a d h l g e f r r F k k l g ; k x l s d j a

m i f u . k z 2 p % f t u x t e i p k ; r k a e a m R r j i n s ' k H k t y f n o l & 2 0 1 5
r d t y l f e f r x f B r u g h a g o z g \$ o g k a v x y s f l r e c j] 2 0 1 5 l s i o z
, d k f d ; k t k u k l f u f " p r d j a

- 3- **l a n H z %** उत्तर प्रदेश में वर्षा जल संचयन का सर्वाधिक प्रचलित ढांचा, तालाब ही हैं। उत्तर प्रदेश के ज्यादातर इलाकों की खेती आज भी, नहरों से ज्यादा तालाबों और नलकूपों पर टिकी है। इस महत्व को देखते हुए ही महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी कानून के तहत उत्तर प्रदेश में तालाब निर्माण के काम को प्राथमिकता पर लिया गया। तालाब बने भी, किंतु इन तालाबों में क्षमता और हुई वर्षा के अनुरूप पानी रुका नहीं। कई जगह तो

इन्हे नलकूप से निकाले पानी से भरा गया; जबकि सभी जानते हैं कि ऐसा करने से वर्षाजल संचयन का उनका मूल मकसद कतई पूरा नहीं होता। जल विशेषज्ञों की राय है कि ज्यादातर मामलों में तालाबों के लिए जगह और डिजायन के चुनाव में हुई गलती मात्र के कारण ऐसा हुआ है। मनरेगा के तहत बनाये तालाबों में चारों तरफ पाल बनाकर पानी आने-जाने के लिए पाइप लगाये जाते हैं। यह कारगर सिद्ध नहीं हुआ। नाकामी की एक वजह, सरकारी तौर पर नवनिर्मित सभी तालाबों के लिए तय यह एकसमान ज्यामिति भी है। इस गलती में मामूली सुधार करते हुए वर्ष 2009 में उत्तर प्रदेश शासन ने आदेश दिया था कि तालाबों में तीन तरफ ही पाल बनाई जाये। तालाबों को

i' B 5

पानी आने की दिशा से खोलकर रखा जाये। किंतु वह आदेश भी ज़मीन पर नहीं उतरा।

fu.kz | [;k&rrh; % | jdkjh ctV | s cuus okyh tyl jpkuk ds fy, txg rFkk fMtk; u dk p; u LFkkuh; t: jr o Hk&kyd ifjflFkr ds vuq kj tS k mfpr gkz r; djus dk NW gkA

mi fu.kz 3 d % tyl jpkuk ds fy, txg rFkk fMtk; u dk r; djus dh fu.kz d "kDr vf/kdkj ijh rjg xtel Hk dks | kA nh tk; A xte ipk; r rFkk | jdkjh rdudh ra- dh Hkfedkj bl ea | g; kxh ek= dh gkA

- 4- **I nHkZ %** वैश्विक तापमान में वृद्धि ने वाष्पीकरण की गति को तेज किया है। गर्म जलवायु का प्रदेश होने के कारण उत्तर प्रदेश में इसका दुष्प्रभाव ज्यादा है। पिछले डेढ़ दशक में उत्तर प्रदेश में विभिन्न सड़क परियोजनाओं के लिए हुए कटान अलावा बड़े पैमाने पर हुए अवैध कटान ने इस दुष्प्रभाव को और बढ़ाया है।

fu.kz | [;k&pkj % unh ds gjs {ks= rFkk vU; | Hk | rgh ty | jpkukvka dh [kkl dj nf{k.k vkj if"pe fn"kk ea LFkkuh; tSfofo/krk o ikuh ds vuqpy ouLifr yxkus vkj ml s | jf{kr djus dk dke | e; c) y{; i kflr rFkk fdz kUo; u 0; oLFkk ds | kFk fu; k't r gkA

mi fu.k; 4 d- ok'ihdj.k jkds ds bl dke dh lrr~fuxjkuh o
oKkfud eW;kadu grq xke ty lfebr@ekgYyk lfebr Lrjh;
vf/kdkfjd tokcngh r; dh tk; A

5- l nHkZ %उत्तर प्रदेश में गंगा, यमुना, गोमती, आमी, सरयू, हिण्डन समेत कई नदियों के किनारे के इलाके उपलब्ध पेयजल की मात्रा और गुणवत्ता में कमी के नये शिकार के रूप में सामने आ रहे हैं। दोहन और संचयन में संतुलन जरूरी है। जलसंचयन के पुराने ढांचों पर बड़े पैमाने पर अवैध कब्जा है और नये ढांचों के लिए भूमि की उपलब्धता, एक बड़ी चुनौती है। श्री दीपक सिंघल जी (प्रधान सचिव सिंचाई एवम् जलसंसाधन विभाग, उ. प्र.) ने रबर डैम के

i'B 6

जरिये नदी प्रवाह की मात्रा बढ़ाने के विचार को पंचायत में समक्ष रखा। श्री राजेन्द्र सिंह ने कहा कि रबर डैम के सभी पहलुओं को जांचे बगैर वह इसके पक्ष या विपक्ष में कोई राय नहीं दे सकते।

fu.k; l ;k&ikp % ikp ea ls ,d ip & fl pkbz foHkx ds e[;
vfhk; ark Jh , l - ds "kekZ ekurs gSfd jcj MSe] phu l er n(u;k Hkj
ea l Qy gqk gA Jh "kekZ mRrj ins'k dh ufn;kaeajcj MSe ds iz; kx
ds i{k ea gA ,d vU; ip vkbz vkbz Vh ds its Jh foukn rkjs dk
Li'V er gSfd "kkl u] vxys dN o'kkard jcj MSe tS s iz; kxka ij
le; o iS k [kpZ u djA its rkjs l er "kSk pkj i pka dh jk; ; gh gS
fd Hkjr h; ifjLFkr vkj vkfFKbh dh nf'V l s ikdfrd iDkgk
cj l krh ukyka rFk is ty dh nf'V l s vuq; kxh gks pps dA/ka vkfn
dks vko"; d rkj ij o'kkZ ty l p; u <kpka ds : lk ea rUnhy fd; k
tkuk cgrj fodYi gA "kkl u] jcj MSe dh rgyuk ea bl fodYi dks
viuh ikFkfedrk cuk; A

mi fu.k; 5 d % bl ds fy, o'kkZ ty l p; u {k-Qy ea of) dk
o'kbkj y{; r; dj d; rnuq kj dk; bAe cuA

mi fu.kž 5 [k %Hkty l æakh mRrj ins'k "kkl ukns'k l [rh l s ykxw
fd, tk; A

mi fu.kž 5 x %fdl h Hh cl koV dk fu; kstu djrs oDr vc ftl
rjg dy {ks=Qy ea l s gfjr {ks=* dk {ks=Qy ifr''kr r; gkrk g\$
ml h rjg *ty {ks=* dk Hh ifr''kr {ks=Qy r; dj bl s vko''; d
cuk; k tk; A

mi fu.kž 5 ?k %*thjks fMLpktž dk eryc g\$ fd "kksku lk''pkr~
fu; kštr {ks= l s ckj tkus okys "kks/kr ižkg dh ek=k "kkl; gksxA
bl dk ;g Hh eryc g\$fd "kksku lk''pkr~ ižtr ižkg dh 100 Qhl nh
ek=k dk mi; kx fu; kštr {ks= ea dj fy; k tk; xkA pkjnhokjh okyh
, d h cl koV a rFkk vksj kšxd bdkb; k ftugkus *thjks fMLpktž dk y{;
ugha fd; k g\$ mul s rkts vki žrž ty dh , ot- ea "kksku ea vkus okys
[kpž l s Mš: xuk vf/kd dher dh nj dk fcy ol yk tk; A , d k djus
l s oš muds Lo; a ds }kjk išk fd, dpjs dk 100 Qhl nh "kksku djus
dks ck/; gksxA

i`B 7

mi fu.kž 5 3 % tks cl koV@m | kx *thjks fMLpktž y{; gkl y dj
yž ml s vki žrž fd, tk jgs rkts ikuh dh nj rFkk ek=k-- nksuks vU;
cl koV@m | kxka dh ryuk ea , d 0; ogkfjd ifr''kr rd de dj nh
tk; A

nj de djuk] młgs ty i qkš; kx ds fy, i žr žr kšgr djrk jgxA
"kksku lk''pkr~ ižtr ty ds 100 Qhl nh i qkš; kx ds dkj.k rkts ikuh
dh vko''; drk młgs de gksxA vr% młgs de ek=k ea ikuh nsus l s gžž
ikuh dh cpr varr% unh dks ml ds fgLI s dk ikuh nsus ea ennxkj
gksxA

mi fu.kž 5 p % ey''kksku l æa ka ds fuekžk ds fy, fy, "kkl u]
LFkkuh; fudk; ka dks vuqku nsus dh ctk;] dtž nA ftl dk Hkxrk

I quf"pr djus ds fy, "kkl u] LFKkuh; fudk; ds I kfk djkj djs fd
xqkoRrk Lrj ij [kjk ik; s tkus ij "kkl u]
"kfk/kr fd, x; sty dksr; eW; ij [kjh yxkA

6- I nHkZ % प्रदेश की कई नदी पुनर्जीवन परियोजनाओं में नदियों के तल को मशीन के जरिये छील कर गहरा तथा ढलवा किया गया है। तल, समतल होने के कारण नदी, नदी नहीं रही। उसका तल प्राकृतिक न होकर, मानव निर्मित नाले की भांति हो गया है। जिला-अमेठी की मालती नदी, इसका एक छोटा सा उदाहरण है। मालती नदी जलग्रहण क्षेत्र में इसके दुष्परिणाम कई रूप में सामने आये हैं : नदी में पानी ज्यादा दिन तक रुकता नहीं। नदी किनारे का भूजल उतर गया है। गाद के नाम पर कई जगह, नदी की रेत हटा दी गई है। इससे जल को संजोकर रखने और सांस लेने की नदी की क्षमता कम हो गई है। खुदाई प्रक्रिया के कारण, नदी के मोड़ों पर मौजूद 10 फुट तक गहरे कुण्ड खत्म हो गये हैं। कुण्डों और ऊबड़-खाबड़ तल के खत्म होने से फरवरी आते-आते नदी की सतह पर पानी नहीं रहता। लिहाजा, नदी किनारे की हरियाली लुट गई है। वन्यजीवों के बसेरे खत्म हो रहे हैं। गर्मियों में खासकर, जंगली जीवों के लिए पेयजल का संकट उत्पन्न हो गया है। परिणामस्वरूप, नीलगाय, नलकूप की टंकियों और खेतों तक आने लगे हैं तथा अन्य वन्यजीव गांवों तक। नदी का ऊबड़-खाबड़ तल ही नदी के प्रवाह को टकराने का मौका देता है। यह टकराहट, नदी में ऑक्सीकरण की प्रक्रिया को सतत् सक्रिय

i'B 8

रखती है। इस सक्रियता के कारण, नदी के जल में ऑक्सीजन की मात्रा अधिकतम बनाये रखने में मदद मिलती है। जब इसकी ओर प्रशासन का ध्यान खींचा गया तो मालती नदी में स्थान-स्थान पर दो-दो मीटर ऊंचे स्टॉप डैम बनाने के टेंडर कर दिए गये। यह दोहरा नुकसान और दोहरा खर्च है।

fu.kz I 4; k&Ng % xkn fudkl h dgka gkz dgka u gkz bl dh vuqfr
unh ry dh Hk&I jpkuk ij fullj djrh gA vr% fg.MUk&; eqk&xak
unh ipk; r ds ikpka ip ekurs gafd unh Hkry ds dVkoka ds oKkfud
vk/kj ds vuq lk gh xkn fudkl h dh vuqfr nh tk; A

mi fu.kz 6 d %ftI unh ea xkn fudkl h vuqfr gkz ogka Hh xkn
fudkl h , d leku u djds , d ygj dh ekfQd leku varjky ds ckn
Aph&uhph gkA

mi fu.kz 6 [k %unh izkg ekxz ds ekska l sigys Nk/&Nk/s dqMka
dh [kpkbz cgnS''kh; egRo dk dke gA vR; r Nk/h vkj ekh eh gks
pplh ufn; ka ea dqM fuekzk dk dke ikfKfedrk ij fd;k tk; A ; g
iR; d Nk/h unh eafd; k tk l drk gA bl ds fy, fdl h v/; ; u dh
vko''; drk ughA bl seujsk ds rgr- ins'k Lrj ij cuh ; kstukvka ea
, d fo''ksk ; kstuk ds #i ea tks'k tk; A

lkntk.k fuokj.k gsrq l nHz l fgr fu.kz ¼ l 4; k 07 l s 11½

7- **l nHz %** गंगा की निर्मलता का लक्ष्य हासिल न हो पाने के पीछे प्रवाह मार्ग में बाधा, नहरी सिंचाई हेतु अधिकतम जल का वितरण, खनन, गंगा भूमि पर अतिक्रमण के अलावा एक अन्य महत्वपूर्ण कारण भी हैं। वह कारण, यह है कि गंगा कार्य योजना से लेकर 'नमामि गंगे' तक सारा बजट और सारा जोर, नदी में मिलने वाले प्रदूषण के शोधन पर है; प्रदूषण न्यूनतम हो, यह अभी तक सरकार की प्राथमिकता बनी ही नहीं। कचरा, कैंसर की तरह होता है। जिस तरह कैंसर का इलाज, उसके स्रोत पर किया जाता है, ठीक उसी तरह कचरे का निष्पादन भी स्रोत पर किया जाना चाहिए। ऐसा नहीं हो रहा। पाइप लाइनों के द्वारा कचरे को नदी के किनारे ढोकर ले जाने का चलन जारी है।

i'B 9

शहरी मल और औद्योगिक अवजल, प्रदूषण के निस्संदेह के बड़े स्रोत हैं; किंतु कृषि रसायन, कीटनाशक, पॉली कचरा, ई कचरा तथा धार्मिक तथा

अन्य ठोस कचरों से नदी को मिल रही चुनौतियों की ओर ध्यान नहीं दिया गया। नदी प्रदूषण मुक्ति की कोई भी योजना बनाते वक्त, भविष्य में नदी विशेष के किनारे बढने वाली आबादी, मल, अवजल और ठोस कचरे का आकलन किया जाना जरूरी होता है। यह नहीं किया गया। यह तब तक संभव भी नहीं है, जब तक कि नदी किनारे के क्षेत्रों को लेकर अगले 25-50 वर्षों का मास्टर प्लान न बना लिया जाये।

प्रदूषण नियंत्रण हेतु केन्द्रीय तथा राज्य स्तरीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों से अपेक्षा की जाती है। सच यह है कि ये बोर्ड महज् प्रदूषण संबंधी शोध, जानकारी, मार्गदर्शी निर्देश तथा 'प्रदूषण नियंत्रण में है' का प्रमाणपत्र जारी करने वाला तंत्र बनकर रह गये हैं। लोगों को पता नहीं है कि उनकी नदी को कौन प्रदूषित कर रहा है।

fu.kz̄ | 4̄; k&l kr % | Hkh i nŵkdk̄a dh | ph̄ cua vk̄j̄ i nŵk.k̄ fuokj.k̄
gŕqdne mBk; s tk; A

mi fu.kz̄ 7 d % un̄h ea i nŵk.k̄ fu; f=r̄ djus ds fy, t: jh gS fd
un̄h | s feyus okys ukyk̄a ds ikuh dh xqkoRrk fu; fer : lk | s tkph
vk̄j̄ | kozt̄fud dh tk; A

mi fu.kz̄ 7 [k % | host̄ rFkk m|ks̄] rjy dpjs ds eq̄; nks L=kr̄ gA
m|ks̄ka rFkk ey "kks̄ku | ā ā-ka ds fy, t: jh gks fd os | ā ā- ds ckj
, d c³s ckM̄Z ij fuEu rF; ka dh nsud fjik̄M̄Z | kozt̄fud dja % | ā ā-
}kjk mi; ks̄ fd; k x; k rktk ikuh] | ā ā- }kjk ey@voty "kks̄ku ds
lk"pkr~vyx gq̄ ikuh rFkk Bk̄l dpjs dh vyx&vyx ek=k] i qk̄k̄; ks̄
fd, x; s "kks̄/kr̄ ty dh dgy ek=k rFkk "kks̄ku iŵZ o lk"pkr~it̄r
ty@voty dh t̄sod rFkk jkl k; fud fjik̄M̄Z/A

mi fu.kz̄ 7 x % bl̄ fjik̄M̄Z dk 15 fnu ea , d ckj "kl dh; vFkok
iz̄kf.kd iz̄ ks̄"kyk | s iz̄kf.kr̄ gks̄k t: jh gkA

mi fu.kz̄ 7 ?k % un̄h ds | ekuk̄Urj , d bā/jl̄ t̄Vj cukdj] | ā f/kr̄
"kj̄ ds | Hkh ukyk̄a dks t̄ks̄³us rFkk rRi "pkr~ un̄h fdukjs fdl h , d
LFkk̄u ij "kks̄ku | ā ā-

yxkus dh ;kstuk l s Jh , l - ds "kekZ l ger gA fdrq "ksk pkj i p
ekurs gafd rduhdh vlg vkfFKZd nf'V l s ; g ;kstuk l oZsB fodYi
ugha gA

mi fu.kZ; 7 3 %i pka dh l oZ Eer jk; gSfd dpjs dks ml ds L=kr l s
ftruk djhc fu'ikfnr fd;k tk; § mruk J\$ Ldj gA , d k djus l s
"ksku izkkyh ij fu; a.k] fuxjkuh rFkk l Qyrk vf/kdre gkskh rFkk
vl Qy gksus ij nq iHko l hferA vr% i pka dh bl jk; dks , d fl) kr
dh rjg viuk; k tk; A

mi fu.kZ; 7 p %ey@voty ds lk"pkr~ ikr ikuh dh i kFkfedrk
fuEufyf[kr dæku] kj u fl QZ r; dh tk; § cfYd l quf"pr fd;k tk; s
fd 0; ogkj eaHh , d k gks %

igyh i kFkfedrk & ftl L=kr ds ftl dk;Z ds ifj.kkeLo: i
ey@voty mRiUu fd;k x; k gk § "ksku lk"pkr~ ml s l oZ fke ml h
L=kr }kj k ml h dk;Z ea i qk; ; ks ea yk; k tk; A

nh jh i kFkfedrk & [krh rFkk ckxokuh ea

rhl jh i kFkfedrk & LFkkuh; rkyckka ea

pkFkh i kFkfedrk & LFkkuh; xj cjl krh ukyka ea

vare i kFkfedrk & LFkkuh; ugj ea

mi fu.kZ; 7 N %Bkd dpjk] fdl h Hh gkyr ea fu.kZ; l d; k nks ea
mfYYkf[kr unh ds rhuks {ks=ka ea u Mkyk tk; A

mi fu.kZ; 7 t %ufn; k *Ma , fj; k* ea rGhy u gk bl ds fy, l Hh
uxjh; cl koVka ea Hkjko {ks=ka vlg dpjk fu'iknu {ks=ka ds fplghdj.k
rFkk vf/kl i pr djus dk dke i kFkfedrk ij gkA

mi fu.kZ; 7 > %unh ea fdl h Hh rjg dk dpjk Mkyus okys ij fcuk
vuofr i fke l puk i kFkfedh ntZ djus rFkk jk'Vh; gfjr i pkV }kj k
; euk unh ds ekeys ea fn, vks'ka ds vkykd ea mRrj i ns'k dh vl;
ufn; ka ds ekeys ea Hh vkfFKZd n.M o dkjkokl dk i ko/kku gkA

i`B 11

fu.k; 7 ~ % "kkl u&i'kkl u l fuf"pr djsfd unh ds yky {ks= ds rjar ckn cl kbz tkus okyh cl koVa iwkr;k fu;kstr gka rFk vfukstr cl koVka ij jkd yxA

7 V % i'pka dh jk; gSfd *thjks fMLpktZ l fuf"pr djus dh "krZ ds l kfk gh uohu fu;kstr cl koVka dks eatjh nh tk; A

7 B % efrZ fuekZkj fol tU dks ydj dthh; inwk.k fu;a.k ckMZ }kjk dbz ekxh "kZ funZ'k fn, x; sgA /kfeZl dk; ka ea iz; kx dh tkus okyh l kexh dks ; euk ea u Qds tkus dks ydj jk'Vh; gfjr i'pkV dk Hk ,d vks'k gA budh ikyuk l fuf"pr djus dh tokngjh l h/ks&l h/ks unh fdukjs ds lFkr rFkZ LFkku@ "konkg xgka ds izaku dh gA LFkuh; i'kkl u bl ea l g; kxh vj fuxjkuhdkZ dh Hkiedk fuHk; A

7 M % mRrj ins'k mPp U; k; ky;] bykgkckn us ; euk vj xak ea efrZ fol tU ij jkd yxkbz gA bl U; kf; d jkd ds vkykd ea ins'k dh l Hk ufn; ka ea efrZ fol tU ifrcA/kr gA "kkl u bl ckr~vf/kl puk tkjh djA

- 8- l aHkZ % हिण्डन, उत्तर प्रदेश की सर्वाधिक प्रदूषित और भारत की दूसरी सर्वाधिक प्रदूषित नदी है। हिण्डन, यमुना में मिलती है और यमुना, गंगा में। स्पष्ट है कि हिण्डन की निर्मलता और प्रवाह सुनिश्चित किए बगैर 'नमामि गंगे' की सफलता तथा गंगा की निर्मलता व प्रवाह सुनिश्चित करना असंभव है। हिण्डन का प्रवाह और निर्मलता, इसकी सहायक काली, कृष्णी, धमोला, पांवधोई आदि धाराओं तथा जलग्रहण क्षेत्र में मौजद बरसाती नालों व जल संचयन संरचनाओं पर निर्भर है। पंचायत में प्रस्तुत एक रिपोर्ट के मुताबिक, सहारनपुर से नोएडा के बीच लिए गये पानी के नमूनों में मात्र एक भनेडा गांव का नमूना ही मानकों पर खरा पाया गया; शेष सभी नमूने फेल हुए। इसकी प्रमाणिकता इस तथ्य से भी है कि जितनी खतरनाक और बड़ी संख्या में हिण्डन नदी तंत्र में रहने वाला जन-जीवन जलजनित बीमारियों का शिकार हो रहा है, उत्तर प्रदेश सीमा के किसी और नदी तंत्र में नहीं। उक्त

दोनो पहलू स्पष्ट करते हैं कि हिण्डन की उपेक्षा करना, गंगा-यमुना के साथ-साथ विशेषकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश के भूजल, खेती, कृषि उत्पादों की गुणवत्ता, स्वास्थ्य, रोजगार और

i'B 12

आर्थिकी के लिए अत्यंत घातक सिद्ध हो रहा है। इसका असर अंततः पूरे उत्तर प्रदेश तथा दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सेहत और आर्थिकी पर पड़ने वाला है।

fu.k; I ;k vkB % xaxk dks ikuh nsus okyh mRrj inS'k dh I Hkh
i krh; ufn; ka ea fg.Mu dks I oki/kd i kFkfedrk nh tk; A bl ea feyus
okyh I Hkh I gk; d

ufn; ka rFk cjI krh ukyka dks fuezy rFk o'kZ ty I s iokgeku cukus
dk dke i kFkfedrk ij gkA

mi fu.k; 8 v % fg.Mu tyxg.k {ks= dh I Hkh ufn; ka dk mnxe
rkyckA I s gqk gA Li'V gS fd fg.Mu dks iokgeku cukus ds fy,
bl ds tyxg.k {ks= dh tyI jpuvka dks I jf{kr vkj I e) djuk
vR; r vko"; d gA

9- I anHkZ % स्वयंसेवी समाज द्वारा भारत में नदी निर्मलता प्रयास की आयु कई दशक हो चुकी है। अनुभव यह है कि एक-दूसरे के दोषारोपण मात्र से समाधान सधेगा नहीं। इसके लिए ईमानदार साझे और आपसी सहयोग जरूरी है। प्रशासन और पब्लिक के साझे से समाधान के रूप में उत्तर प्रदेश के सहारनपुर नगर से गुजरने वाली पांचधोई नदी का उदाहरण हमारे सामने है। जलबिरादरी की स्थानीय इकाई की पहल पर तत्कालीन जिलाधिकारी श्री आलोक कुमार व स्थानीय नागरिकों द्वारा पेश सफलता प्रमाण है कि यदि इच्छाशक्ति हो, तो बिना अतिरिक्त धन या परियोजना के कचरा मुक्ति संभव है।

गौर करें कि पांचधोई के इस उदाहरण से प्रेरित होकर तत्कालीन उत्तर प्रदेश शासन ने एक आदेश जारी किया था, जिसमें उत्तर प्रदेश के कई जिलों का उल्लेख करते हुए यह अपेक्षा की गई थी कि सहारनपुर प्रशासन-पब्लिक के साझे की सफलता अन्य जिलों में भी दोहराई जायेगी। किंतु यह हो न सका।

हिण्डन—यमुना—गंगा पंचायत के आयोजक 'जल—जन जोडो अभियान के संचालक श्री राजेन्द्र सिंह, अन्य विशेषज्ञों, जमीनी हकीकत से रुबरु प्रतिभागियों तथा सभा में उपस्थित शासन—प्रशासन प्रतिनिधियों ने संकेत दिया कि वे पांवधोई के प्रयोग को ज्यादा विस्तार और विविधता के साथ हिण्डन नदी में दोहराने के इच्छुक हैं।

i`B 13

fu.kz; I d; k 9 % I Hk }kjk "kl u&i'kl u&ifcyd ds I k>s I s fg.Mu fueyhdj.k ds y{; dks vatke nsus dh n"kbz xbz bPNk dk I Hk ip Lokxr djrs gA ipka dh jk; ea bl ds fu; kst u] I pkyu] fdz kko; u] fuxjkuh rFkk eW; kdu grq , d I k>k&I fdz; vks pkfjd ra= fodfl r dju vko"; d gA

- 10- I nHkZ % किसी भी नदी की निर्मल कथा टुकड़े—टुकड़े में लिखी तो जा सकती है, किंतु सोची नहीं जा सकती। हिण्डन नदी निर्मलीकरण को भी समग्र सोच व समग्र प्रयासों की आवश्यकता है। इसे इस तरह अंजाम दिया जाना चाहिए ताकि यह उत्तर प्रदेश ही नहीं, देश की दूसरे प्रांतों के लिए सीखने योग्य एक सबक बन सके।

fu.kz; I d; k nl % fg.Mu fueyhdj.k grq pkj Lrjh; 0; oLFkk <kpk cuk; k tk; s%fg.Mu tyxg.k {ks= Lrjh; } ftyk Lrjh; } rgl hy Lrjh; rFkk rgl hy ds Hhrj tyI jpk Lrjh; A

हिण्डन जलग्रहण क्षेत्र स्तरीय व्यवस्था

mi fu.kz; 10 d % fg.Mu unh tyxg.k {ks= LRkjh; 0; oLFkk] , d I "kDr&I {ke&ekxh"khz fdrq tokcng 0; oLFkk gkA ;g ekxh"khz 0; oLFkk] ufrxr~fu.kz; k ekxh"khz funz'ka dks r; dju\$ mudh ikyuk rFkk foRRh; 0; oLFkk dsfy, I {ke rFkk tokcng gkA

mi fu.kz; 10 [k %fuey fg.Mu ekxh"khz 0; oLFkk ea "kfey fd, tkus okys ifrfuf/k % dshh; ou ,oe~ lk; kbj.k ea=ky; dk ,d ifrfuf/k] dshh; ty I d k/ku] unh fodkl vj xak i qjks)kj ea=ky; dk ,d ifrfuf/k] mRrj ins'k jkT; fl pkbz ,oe~ ty I d k/ku foHkx ds jkT;

Lrjh; nks ifrfuf/k] fg.Mu ty xg.k {ks= ds l Hkh e.Myk; [r] iR; d
e.My Lrj l s , d&, d rduhdh ifrfuf/k] fg.Mu tyxg.k {ks= ds
l Hkh l k] n] mRrj ins'k inw.k.k fu; æ.k ckMz dk , d ifrfuf/k] iæ[k
LFkkuh; vks] kfxd ifj l æk ds rhu ifrfuf/k] vkbz vkbz Vh] : 3dh dk
, d ifrfuf/k] us'kuy bāVhV; v] vkbz gkbMksykt h dk , d oSkfud
ifrfuf/k]

l w/y i s j , .M i Yi f j l p z bāVhV; v] dk , d oSkfud ifrfuf/k] p k k j h
p j .k f l g fo"ofok | ky; 1/2 B 1/2 dk , d iz'kkl fud ifrfuf/k] j k'Vh;
g f j r U; k; k f / k d j .k

i`B 14

l s l o k f u o r , d U; k f; d l n L;] foRr fu; k s t u , o e - y [k k f u x j k u h
l e h { k k g s r q f o " k s k k] , d f o } k u u x j f u ; k s t d] bāM; k o k V j i k V z j f " k i
v k j fg.Mu tyfcjknjh t s LFkkuh; l e > r f k k t u & v f h k ; k u l p k y u
d s v u k k o h n k s f o " k s k k L o ; d o h l æ B u k a d s , d &, d ifrfuf/k] fg.Mu
tyxg.k {ks= e a i j h r j g i h k k o h i æ [k e h f M ; k l e n g d k i z ' k k l f u d
i æ [k] u n h & h k t y & d f ' k & l e k t e l y k a i j i f " p e m R r j i n s ' k { k s -
f o " k s k e a 0 ; k o g k f j d v u k k o o K k u j [k u s o k y s d æ " k % r h u & r h u
f o " k s k K A

mi fu.kz; 10 x % mDr ekxh"khz 0; oLFkk ds l pkyu gsrq ekxh"khz
0; oLFkk Lrj ij vxysnl o'kkz dsfy, iwkbkfyd *fgaMu fueyhdj.k
fe"ku* dh LFkkiuk dh tk; A ; g fe"ku] ekxh"khz 0; oLFkk ds nkf; Roka
ds fdz, kko; u gsrq l eUk; ds vykok foRrh; vkoā/u] vāts[k.k] dk; Z dh
fuxjkuh rFkk ifj.kke eW; kdau dsfy, tokcng gkxhA

mi fu.kz; 10 ?k % fe"ku }kjk foRrh; vkoā/u] l h/ks rgl hy rFkk
tyl j p u k L r j h ; u k M y , t s h d k s f d ; k t k ; A m u d k f o R r h ;
y [k k & t k [k k H k h l h / k s b l h L r j l s f y ; k t k ; A ; f n l k a n f u f / k]
u x j i k f y d k @ f t y k i p k ; r f u f / k] e u j s x k v k f n l s f o R r h ; 0 ; o L F k k d h
t k u h g k s r k s H k h f o R r v k o ā / u e a m D r i f d z k v i u k b z t k ; A b l l s
f o R r h ; v k o ā / u e a H k z V k p k j r F k k n j h l s f u t r k f e y s x h A

जिला / तहसील / जलसंरचना स्तरीय व्यवस्था

fu.kz; Lk; k 11 % fu; kstu dk dk; l ftyk Lrj ij u fd; k tk; A
ftyk Lrjh; ra= dh tokcngh l ca/kr 0; oLFkkvka ds chp ekxh"khz
funz'kka ds ipkj&i;l kj] l elb;] dk; l izfr] fuxjkuh] l kekftd
vad{k.k rFkk ifj.kke eW; kadu fjikrktZ dk ysu&nsu] rFkk fookn dh
lLFkr esoSkkfud l ek/kku l fuf"pr djus dh gka

mi fu.kz; 11 d % ftyk Lrjh; 0; oLFkk] ftykf/kdkjh dh urRo ea
l pkfyr gka ftykf/kdkjh l fuf"pr dja fd ftyk Lrjh; uxj@xte
fodkl , tdl h] ftyk m|ks dsh] ftyk inwk.k fu; a.k ckM] ftyk
ipk; r@uxj fuxe@uxjikfydk] l puk , oe~ tul EidZ foHkkx] ty
fuxe] i fyi foHkkx] df'k foHkkx] cxxokuh fe"ku] lk"q ikyu foHkkx]
f"kk{kk foHkkx] LokLF; foHkkx] ou foHkkx] fl pkbZ , oe~ ty l d k/ku
foHkkx rFkk ftyk df'k foKku dshz---- rgl hy o tyl j puk Lrj

i`B 15

ij fg.Mu fueyhdj.k gsrq cuh ; kstuvka ds fdz kbo; u es ijh rjg
l ghkxh o tokcngh Hkiedk fuHkk; A

mi fu.kz; 11 [k & fg.Mu fueyhdj.k gsrq fu.kz; l ; k 10 d ea
l qk; s ekxh"khz <kps ds ekxh"khz funz'kka ds vuq kj] fdz kbo; u]
fu; kstu] fuxjkuh rFkk eW; kadu gsrq CykM rFkk tyl j puk Lrj ij
dk; zyka dk xBu fd; k tk; A bu dk; zyka ds dk; [ks=] drD;]
vf/kdkj rFkk bl dsfy, if"kk{k.k o tokcngh l fuf"pr gka

11 x % rgl hy vkj rgl hy Lrjh; dk; zy ea "kkfey fd, tkus okys
l nL; % miftykf/kdkjh] CykM ied[k@egki] CykM fodkl vf/kdkjh]
i fyi vf/kdkjh] fu.kz; l ; k 10 ?k ea l qk; s ftyk Lrjh; foHkkxka ds
rgl hy Lrjh; fu.kz; d vf/kdkjh] LFkkuh; rhFkZ rFkk "konkg xgka ds
ied[k] nks tu&vfHk; ku fo"kskK] , d fof/k fo"kskK] fg.Mu fdukjs ds
U; ure nks vkj vf/kdre ikp ied[k m|kska ds , d&, d ifrfuf/k] nks
LFkkuh; C; jks ied[k] unh&Hkt y&df'k&l ekt&l pukf/kdkj o U; kf; d
ifdz k el yka ij ml h ftyk fo"ksk ea 0; kogkfj d dk; kuzko j [kus okys
de"kk% nk&nks xj ljdkjh ifrfuf/ka rgl hy Lrj ij Ldw rFkk

dklyst Lrj ij tkxfr rFkk fdz kbo; u grq; pk Vky; ka r\$ kj djus ds
fy, dz" k% nks&nls LkLFkkuka dks ukMy Ldw@dklyst cukdj rgl hy
Lrjh; dk; zy ea "kkfey fd; k tk; A

11 ?k % pkFkk dk; zy] rgl hy ea ekst m fo"ky rkykc@>hy] ukys
rFkk unh ds Lrj ij cuA ; g dk; zy] ekxh"kh funz'ka ds vkykd ea
ty bdkbz ds Lrj ij ; kstuk] fdz kbo; u] fuxjkuh rFkk LoSPNd
ew; kdu grqmRrjnk; h gka tyl jpuuk Lrjh; dk; zy] miftykf/kdkjh
dh fuxjkuh ea l pkfyr rFkk xBr gka tyl jpuuk Lrjh; dk; zy dk
<kpk-- lrr~ lfdz rk] tokcngh rFkk LFkkuh; l ghkfxrk l quf"pr
djus okyk gka ; g l quf"pr djus ds fy, vko"; drkuq kj dkunxk\$
vu; vf/kdkjh rFkk xteLrjh; fofok oxka dks tk³k tk; \$ fdarq usRo
ijh rjg xj ljdkjh gkFka ea gka tyl jpuuk Lrjh; dk; zyka dks
lfdz cukus ea LFkkuh; Ldw@dklystka ds Hkxky foHkx] lk; kbj.k
foHkx] f"kk{kk foHkx] jk'Vh; l ok ; kstuk] ,u-l h-l h rFkk usg# ; pd
dlnz ds ekst m <kps ds mi; kxh vkfFkd o ekuo l a k/ku dk mi; kx
l quf"pr fd; k tk; A

IK' B 16

11 ³ % rgl hy Lrj ij tokcngh vkj lfdz rk l quf"pr djus ds
fy, vko"; d g\$ bl Lrj ij l klrkfgd varjky Lrj ij l elb; djus
okyk l eng cuk; k tk; A l quf"pr gks fd og l eng] l l rkg dk , d
dk; Inol] ijh rjg fg. Mu fueyhdj.k fe"ku ds dk; ky; h rFkk
unh@l ekt@tyl jpuuk Lrjh; bdkbz ds lkl tkdj djus yk; d
dk; ka ea yxk; xka

-----निर्णायक पंच समूह का समन्वय तथा इस निर्णयों का लेखन अरुण
तिवारी द्वारा किया गया।

bZnLrkost gkus ds dkj.k bl ij i pka ds glrk{kj dh vfuok; rk ugh gA